

हिन्दी (पाठ्यक्रम अ)

निर्धारित समय : 3 घंटे

अधिकतम अंक : 80

- निर्देश : (i) इस प्रश्नपत्र के चार खण्ड हैं - क, ख, ग और घ।
(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।
(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमशः लिखिए।

प्रश्नपत्र संख्या 3/1/1

खंड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए।

1×5 = 5

भारत के ऋषि-मुनि जानते थे कि प्रकृति जीवन का स्रोत है और पर्यावरण के लिए समृद्ध और स्वस्थ होने से ही हमारा जीवन भी समृद्ध और सुखी होता है। वे प्रकृति की दैवी शक्ति के रूप में उपासना करते थे और उसे 'परमेश्वरी' भी कहते थे। उन्होंने पर्यावरण पर बहुत गहरा चिंतन किया। जो कुछ पर्यावरण के लिए हानिकारक था, उसे आसुरी प्रवृत्ति कहा और जो हितकर था उसे दैवी प्रवृत्ति माना।

भारत के पुराने ग्रंथों में वृक्षों और वनों का चित्रण पृथ्वी के रक्षक वस्त्रों के रूप में किया गया है। उनको संतान की तरह पाला जाता था और हरे-भरे पेड़ों को अपने किसी स्वार्थ के लिए काटना पाप कहा जाता था। अनावश्यक रूप से पेड़ों को काटने पर दंड का विधान भी था।

मनुष्य यह समझता है कि समस्त प्राकृतिक संपदा पर केवल उसी का आधिपत्य है। हम जैसा चाहें इसका उपभोग करें। इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण मानव ने इसका इस हद तक शोषण कर लिया है कि अब उसका अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है। वैज्ञानिक बार-बार चेतावनी दे रहे हैं कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा करो, अन्यथा मानव जाति नहीं बच पाएगी। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की रक्षा के महत्व को 'तुलसी' और 'पीपल' के उदाहरणों से समझा जा सकता है। इन जीवनोपयोगी वृक्षों की देवी-देवता के समान ही पूजा की जाती है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्ष को परम रक्षक और मित्र बताया गया है। यह हमें अमृत प्रदान करता है, दूषित वायु को स्वयं ग्रहण करके हमें प्राणवायु देता है, मरुस्थल का नियंत्रक होता है, नदियों की बाढ़ को रोकता है और जलवायु को स्वच्छ बनाता है। इसलिए हमें वृक्षमित्र होकर जीवन-यापन करना चाहिए।

- (i) भारत के ऋषि-मुनियों के अनुसार जीवन की समृद्धि आधारित है:
- (क) प्रकृति के संरक्षण पर
 - (ख) पर्यावरण की समृद्धि पर
 - (ग) अपार धन-संग्रह पर
 - (घ) असीमित ज्ञान-भंडार पर
- (ii) गद्यांश में 'आसुरी प्रवृत्ति' का आशय है :
- (क) राक्षसी प्रवृत्ति
 - (ख) मानवता की विनाशक प्रवृत्ति
 - (ग) पर्यावरण के लिए अहितकर प्रवृत्ति
 - (घ) हानिकारक प्रवृत्ति
- (iii) पर्यावरण प्रदूषण का कारण है कि मनुष्य:
- (क) प्रकृति पर अपना एकाधिकार मानता है
 - (ख) प्रकृति के दोहन के लिए प्रयास करता है
 - (ग) जीवन की सुखमयता के लिए स्वार्थी हो जाता है
 - (घ) प्रकृति के संरक्षण का प्रयास नहीं करता
- (iv) वृक्ष को सच्चा मित्र मानने का कारण नहीं है:
- (क) छाया और फल देना
 - (ख) पर्यावरण को शुद्ध रखना
 - (ग) दूषित वायु को हटाकर प्राणवायु देना
 - (घ) मनुष्य को पवित्रता प्रदान करना
- (v) तुलसी और पीपल का उदाहरण देकर लेखक क्या बताना चाहता है:
- (क) ये वनस्पतियाँ रोग दूर करती हैं
 - (ख) उपयोगी वनस्पति को देवता माना जाता है
 - (ग) पीपल छायादार पेड़ है
 - (घ) इन्हें उजाड़ा नहीं जाना चाहिए

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:

1×5 = 5

प्रकृति ने मानव जीवन को बहुत सरल बनाया है, किंतु आज का मानव अपने जीवन-काल में ही पूरी दुनिया की सुख-समृद्धि बटोर लेने के प्रयास में उसको जटिल बनाता जा रहा है। इस जटिलता के कारण संसार में धनी-निर्धन, सत्ताधीश-सत्ताच्युत, संतानवान-निस्संतान सभी सुख-शांति की चाह तो रखते हैं, किंतु राह पकड़ते हैं आह भरने की। मरु-मरीचिका के मैदान में जल की, धधकती आग में शीतलता की चाह रखते हैं। विद्वानों का विचार है कि संसार में सुख का मार्ग है - आत्मसंयम। किंतु मानव इस मार्ग को भूलकर सांसारिक पदार्थों में, इंद्रिय विषयों की प्राप्ति में आनंद ढूँढ़ रहा है - परिणामतः दुख के सागर में डूबता जा रहा है। आत्मसंयम का मार्ग अपने में बहुत स्पष्ट है, उसकी उपादेयता किसी भी काल में कम नहीं होती। इंद्रिय-विषयों का संयम ही आत्मसंयम है। भौतिक पदार्थों के प्रति इंद्रियों का प्रबल आकर्षण मानवीय दुखों का मूल कारण माना गया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के फैलाव से यह आकर्षण तीव्र से तीव्रतर होता जा रहा है। पर ऐसी स्थिति में याद रखना आवश्यक है कि ये भौतिक पदार्थ सुख तो दे सकते हैं, आनंद नहीं। आनंद का निर्झर तो आत्मसंयम से फूटता है। उसकी मिठास अनिर्वचनीय और अनुपम होती है। इस मिठास के सम्मुख धन-संपत्ति, सत्ता, सौंदर्य का सुख, सागर के खारे पानी जैसा लगने लगता है।

- (i) आज का आदमी जीवन को अधिक जटिल कैसे बना रहा है:

- (क) सुख- शांति की प्राप्ति के प्रयास में
- (ख) अपना यश फैलाने की कोशिश में
- (ग) दुनिया की सुख-समृद्धि को बटोरने की कोशिश में
- (घ) असीमित लालसाओं को पूरा करने की चाह में

- (ii) 'मरु-मरीचिका के मैदान में जल की चाह' का अभिप्राय है:

- (क) भौतिक पदार्थों में सुख-शांति प्राप्त करना
- (ख) उपभोक्तावादी संस्कृति के वातावरण में वैराग्य की बातें करना
- (ग) धधकती आग में शीतलता की राह देखना
- (घ) धनहीनता की दुनिया में भोग-विलास के सपने सँजोना

- (iii) 'आत्मसंयम' का तात्पर्य है :

- (क) अपनी आत्मा पर नियंत्रण
- (ख) अपनी भावनाओं का नियमन

- (ग) अपने मन का वशीकरण
- (घ) इंद्रियों के विषयों के प्रति आकर्षण पर संयमन

(iv) गद्यांश के अनुसार भौतिक पदार्थ :

- (क) सुख दे सकते हैं
- (ख) आनंद दे सकते हैं
- (ग) न सुख दे सकते हैं, न आनंद
- (घ) सुख दे सकते हैं, आनंद नहीं

(v) 'जटिल' शब्द का अर्थ नहीं है:

- | | |
|--------------|------------|
| (क) कठिन | (ख) पेचीदा |
| (ग) उलझा हुआ | (घ) मैला |

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:

1×5 = 5

हरी-हरी वह घास उगाती है

फसलों को लहलहाती है

फूलों में भरती रंग

पेड़ों को पाल-पोसकर ऊँचा करती

पत्ते-पत्ते में रहे ज़िन्दा हरापन

अपनी देह को खाद बनाती है

धरती - इसीलिए माँ कहलाती है।

पानी से सराबोर हैं सब

नदियाँ, पोखर, झरने और समंदर

ज्वालामुखी हजारों फिर भी

सोते धरती के अंदर!

जैसा सूरज तपता आसमान में

धरती के भीतर भी दहकता है

गोद में लेकिन सबको

साथ सुलाती है

धरती - इसीलिए माँ कहलाती है।

आग-पानी को सिखाती साथ रहना

हर बीज सीखता इस तरह उगना,

एक हाथ फसलें उगाकर

सबको खिलाती है

दूसरे हाथ सृजन का

सह -अस्तित्व का

एकता का पाठ पढ़ाती है

धरती - इसीलिए माँ कहलाती है।

(i) पत्ते-पत्ते को हरा-भरा बनाए रखने के लिए धरती :

(क) सूर्य से धूप लेती है

(ख) बादलो से सिंचाई करवाती है

(ग) अपनी देह को खाद बनाती है

(घ) सबके स्वास्थ्य का ध्यान रखती है

(ii) धरती माँ परस्पर विरोध-भाव रखने वालों का एक साथ रहना कैसे सिखाती है?

(क) नदियाँ, पोखर, सागर आदि के द्वारा

(ख) ज्वालामुखी के स्वभाव से गरमी कम करके

(ग) उन्हें पाल-पोस कर बड़ा बनाती है

(घ) विरोधियों को संतान के समान गोद में खिलाती है

(iii) धरती माँ सभी के लिए खाने की व्यवस्था कैसे करती है?

(क) खेतों को जोतने लायक बनाकर

(ख) फसलें उगाकर

(ग) अंदर-बाहर की गर्मी से

(घ) अपने देह की खाद से

(iv) कविता में 'सृजन' शब्द का आशय है:

(क) निर्माण (ख) संरचना

(ग) सृष्टि (घ) फसलें

(v) 'सूरज' का पर्यायवाची नहीं हैं:

(क) दिनकर (ख) दिवाकर

(ग) रत्नाकर (घ) प्रभाकर

4. निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:

1×5 = 5

कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनंदन-

पाप-शाप सब शांत शमन कर, दर्प-द्वेष दुख-दैन्य हवन कर

शांति-त्याग सत-सुंदर शिव की जले विश्व में जोत निरंतर

कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा हम करने अभिनंदन।

स्वर्ग बने मनुजों की संसृति और अखंडित हो यह संस्कृति,

सभी चढ़ें सोपान प्रगति के कहीं न हो जीवन की दुर्गति,

सब के सुख में व्यक्ति सुखी हो, कहीं न हो जन का दुख-क्रंदन

कोटि-कोटि उर-सुर से माता! तेरा सब करते अभिनंदन।

(i) कवि मातृभूमि से किसके विनाश की प्रार्थना कर रहा है?

(क) मद, मोह एवं लोभ।

(ख) गर्व, वैर एवं विषाद।

(ग) क्रोध, आवेश एवं आक्रोश।

(घ) पाखंड, झूठ एवं पाप।

(ii) कवि विश्व में किस ज्योति की कामना कर रहा है?

(क) ज्ञान और अध्यात्म की। (ख) तमनाशिनी प्रभा की।

(ग) सत्यं, शिवं, सुंदरं की। (घ) मानसिक मलिनता के विनाश की।

(iii) 'संसार में कोई दुखी न हो' प्रार्थना का भाव किस पंक्ति में निहित है:

- (क) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो'।
- (ख) 'सभी चढ़ें सोपान प्रगति के'।
- (ग) 'पाप-शाप सब शांत-शमन कर'।
- (घ) 'कहीं न हो जन का दुख-क्रंदन'।

(iv) 'सबके सुख में व्यक्ति सुखी हो' - पंक्ति का आशय है:

- (क) संसार में सभी प्राणी सुखी हों।
- (ख) विश्व में मानवता की ज्योति जगे।
- (ग) व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के सुख में विकल हो जाए।
- (घ) प्रत्येक व्यक्ति दूसरों के सुख को अपना सुख माने।

(v) 'दर्प-द्वेष-दुख-दैन्य' में अलंकार है:

- (क) यमक (ख) श्लेष
- (ग) उपमा (घ) अनुप्रास

खंड - ख

5. (i) 'जो लोग पढ़ने के इच्छुक हैं, उन्हें यहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।' साधारण वाक्य में बदलिए:

1

- (क) पढ़ने के इच्छुक लोगों को यहाँ सभी सुविधाएँ उपलब्ध हैं।
- (ख) पढ़ाई करने वालों को यहाँ सभी सुविधाएँ मिलती हैं।
- (ग) पढ़ाई करने वाले यहाँ सभी सुविधाएँ पा सकते हैं।
- (घ) पढ़ने वाले यहाँ सभी सुविधाएँ पाते हैं।

(ii) संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए :

1

- (क) तुम्हारा अभिमान गृहसुख का विनाश करेगा।
- (ख) आप सब कुछ बोलिए किंतु उसको भ्रष्ट मत कहिए।
- (ग) वह ज्यों ही घर से निकला त्यों ही वर्षा होने लगी।
- (घ) तुम जहाँ रहते हो, वहीं जाओ।

(iii) मिश्र वाक्य छाँटिए:

1

- (क) तुम या तो मेरी बात मानो या यहाँ से चले जाओ।
- (ख) यह पुस्तक लिखी है इसलिए पुरस्कार मिला है।
- (ग) मेरी राय है कि सारी संस्थाएँ बंद कर देनी चाहिए।
- (घ) बहुत प्रयासों के बाद उसको वह पुस्तक मिली।

(iv) 'उसकी दादी घर में आकर माँ से मिलकर चली गई।' वाक्य का मिश्र वाक्य का रूप होगा:

1

- (क) उसकी दादी घर में आई और माँ से मिलकर चली गई।
- (ख) जैसे ही दादी घर में आई वैसे ही माँ से मिलकर चली गई।
- (ग) दादी घर में आते ही माँ से मिली और चली गई।
- (घ) दादी घर में आकर माँ से मिलकर चली गई।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित शब्दों के पद-परिचय के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए:

1×4 = 4

(i) उसका लखनवी अंदाज लेखक को प्रभावित न कर सका।

- (क) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (ख) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (ग) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (घ) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ii) उसने प्राकृतिक दृश्यों को देखा।

- (क) अकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (ख) सकर्मक क्रिया, पूर्ण भूतकाल, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (ग) सकर्मक क्रिया, सामान्य भूतकाल, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (घ) प्रेरणार्थक क्रिया, अपूर्ण भूतकाल, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(iii) 'उन्होंने खीरे को बड़ी नज़ाकत से बाहर फेंक दिया'।

- (क) क्रियाविशेषण, कालवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।
- (ख) क्रियाविशेषण, रीतिवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण।

- (ग) क्रियाविशेषण, स्थानवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण ।
 (घ) क्रियाविशेषण, परिमाणवाचक, 'फेंक दिया' का विशेषण ।
 (iv) तू यहाँ क्यों खड़ा है?
 (क) सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यम पुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन ।
 (ख) निश्चयवाचक, सर्वनाम, उत्तम पुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन ।
 (ग) सर्वनाम, संबंधवाचक, प्रथम पुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन ।
 (घ) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, उत्तम पुरुष, पुल्लिङ्ग, एकवचन ।

7. (i) भाववाच्य कहते हैं:

1

- (क) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्ता होता है ।
 (ख) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्म होता है ।
 (ग) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय क्रिया होती है ।
 (घ) जहाँ क्रिया का मुख्य विषय कर्ता या कर्म से भिन्न होता है ।

(ii) निम्नलिखित में कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए :

1

- (क) उसकी धुआँधार तारीफ़ की गई ।
 (ख) बातचीत तो पिताजी ने शुरू की थी ।
 (ग) तुम्हारी बातें सुनी जाएँगी ।
 (घ) आइए, नहाया जाए ।

(iii) निम्नलिखित में कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए:

1

- (क) सुशीला ने योग्यता प्राप्त की ।
 (ख) मैं असहाय और असुरक्षित हो गया हूँ ।
 (ग) भरी सभा द्वारा तुम्हारी प्रशंसा की गई ।
 (घ) अब उससे चला नहीं जाता ।

(iv) निम्नलिखित में भाववाच्य वाला वाक्य कौन सा है?

1

- (क) छात्रों द्वारा जो प्रश्न उठाए गए थे उनका उत्तर दे दिया गया है ।

- (ख) यहाँ इकट्ठा न हुआ जाए।
- (ग) मैंने ध्यानपूर्वक पढ़ाई कर ली है।
- (घ) वे केवल उपदेश ही नहीं देते थे, पढ़ाते भी थे।
8. (i) 'छिः! तुमने तो कुल पर कलंक लगा दिया'। रेखांकित शब्द हैं: 1
- (क) अव्यय, विस्मयसूचक।
- (ख) अव्यय, हर्षसूचक।
- (ग) अव्यय, शोकसूचक।
- (घ) अव्यय, घृणासूचक।
- (ii) नीचे लिखे वाक्यों में भाववाच्य वाला वाक्य छाँटिए: 1
- (क) उसकी आर्थिक स्थिति सिकुड़ रही है।
- (ख) पुलिस द्वारा लाठी चलायी गई।
- (ग) आइए, पार्क में बैठा जाए।
- (घ) आप पद का दुरुपयोग कर रहे हैं।
- (iii) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्रवाक्य छाँटिए : 1
- (क) यह प्रश्न कठिन है किंतु तुम्हें सरल लगता है।
- (ख) वह दाता भी है और द्रष्टा भी है।
- (ग) आप एक संवेदनशील नागरिक हैं।
- (घ) लेखक उस आभ्यंतर विवशता को पहचानता है जिसको उसने भोगा है।
- (iv) 'हमारे हरि हारिल की लकरी' में अलंकार है: 1
- (क) यमक (ख) श्लेष
- (ग) मानवीकरण (घ) अनुप्रास
9. (i) किस अलंकार में उपमेय की उपमान से समता की जाती है? 1
- (क) श्लेष (ख) यमक
- (ग) उपमा (घ) अनुप्रास

- (ii) निम्नलिखित में उत्प्रेक्षा अलंकार का उदाहरण छाँटिए : 1
- (क) कल्पलता-सी अतिशय कोमल ।
- (ख) कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय ।
- (ग) चरणकमल बंदों हरिराई ।
- (घ) लंबा होता ताड़ का वृक्ष मानो छूने अंबर तल को
- (iii) 'नयन तेरे मीन-से हैं' में उपमेय शब्द है : 1
- (क) नयन
- (ख) तेरे
- (ग) मीन
- (घ) से
- (iv) निम्नलिखित में मानवीकरण अलंकार को पहचानिए: 1
- (क) मृदुल-मुकुल-सा मंजु मनोहर ।
- (ख) कोटि-कुलिस-सम वचन तुम्हारा ।
- (ग) भव-सागर में घूमता-फिरता हूँ स्वच्छंद ।
- (घ) थकी सोयी है मेरी मौन-व्यथा ।

खंड - ग

10. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1×5 = 5

हमने भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने, काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया, लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ, इतना जरूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं। इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िंदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित, असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

- (i) लेखिका के भाइयों की गतिविधियों का दायरा घर के बाहर था, क्योंकि-
- (क) उनकी गतिविधियाँ घर में संपन्न नहीं हो सकती थीं।
 - (ख) पतंग और गिल्ली-डंडे का खेल घर से बाहर का था।
 - (ग) घर से बाहर उनकी गतिविधियों पर कोई नियंत्रण नहीं था।
 - (घ) पारिवारिक परंपरा के अनुसार पुरुष को बाहर जाने की स्वतंत्रता थी।
- (ii) लेखिका की सीमा घर ही क्यों थी?
- (क) लड़कियाँ डरपोक स्वभाव के कारण घर की सीमा में ही रहती थीं।
 - (ख) घर से बाहर का वातावरण उनके लिए असुरक्षित था।
 - (ग) समाज में लड़कियों का बाहर जाना ठीक नहीं माना जाता था।
 - (घ) पारिवारिक परंपरा के अनुसार यही नियम था।
- (iii) 'उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले में फैली रहती थीं' वाक्य का आशय है:
- (क) घर और पड़ोसी के बीच में कोई विभाजक दीवार नहीं थी।
 - (ख) पूरा मोहल्ला एक-दूसरे के सुख-दुख का हिस्सेदार था।
 - (ग) आपसी प्रेमभाव के कारण पूरे मोहल्ले में पारिवारिक संबंध थे।
 - (घ) परंपरागत 'पड़ोस कल्चर' पड़ोसी को भी परिवार का सदस्य मानती थी।
- (iv) परंपरागत 'पड़ोसकल्चर' से विच्छिन्न होने का परिणाम है:
- (क) हम फ्लैटों में रहने लगे हैं।
 - (ख) पारस्परिक प्रेमभाव क्षीण हो गया है।
 - (ग) सामाजिकता घट गई है।
 - (घ) हम असहाय, असुरक्षित और संकुचित हो गए हैं।
- (v) 'हमने गिल्ली-डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने का काम भी किया'। वाक्य का प्रकार है:
- (क) सरल वाक्य
 - (ख) मिश्र वाक्य
 - (ग) संयुक्त वाक्य
 - (घ) दीर्घ वाक्य

अथवा

इस देश की वर्तमान शिक्षा-प्रणाली अच्छी नहीं। इस कारण यदि कोई स्त्रियों को पढ़ाना अनर्थकारी समझे तो उसे उस प्रणाली का संशोधन करना या कराना चाहिए, खुद पढ़ने-लिखने को दोष न देना चाहिए। लड़कों ही की शिक्षा-प्रणाली कौन-सी बड़ी अच्छी है। प्रणाली बुरी होने के कारण क्या किसी ने यह राय दी है कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ? आप खुशी से लड़कियों और स्त्रियों की शिक्षा की प्रणाली का संशोधन कीजिए। उन्हें क्या पढ़ाना चाहिए, कितना पढ़ाना चाहिए, किस तरह की शिक्षा देनी चाहिए और कहाँ पर देनी चाहिए - घर में या स्कूल में - इन सब बातों पर बहस कीजिए, विचार कीजिए, जी में आए सो कीजिए; पर परमेश्वर के लिए यह न कीजिए कि स्वयं पढ़ने-लिखने में कोई दोष है - वह अनर्थकर है, वह अभिमान का उत्पादक है, वह गृह-सुख का नाश करने वाला है। ऐसा कहना सोलहों आने मिथ्या है।

(i) कुछ लोगों के अनुसार स्त्री शिक्षा के अनर्थकर होने का एक संभावित कारण है।

- (क) शिक्षित स्त्री का स्वतंत्र होना।
- (ख) शिक्षित स्त्री द्वारा पुरुष की बराबरी करना।
- (ग) शिक्षित स्त्री द्वारा परिवार की उपेक्षा करना।
- (घ) वर्तमान शिक्षा प्रणाली।

(ii) यदि देश की शिक्षा-प्रणाली अच्छी न हो तो हमें:-

- (क) स्त्रियों को पढ़ाना-लिखाना नहीं चाहिए।
- (ख) स्कूल-कॉलेजों को बंद कर देना चाहिए।
- (ग) लड़कियों को घर पर ही पढ़ाना चाहिए।
- (घ) शिक्षा-प्रणाली में बदलाव लाना चाहिए।

(iii) लेखक ने किसको 'सोलहों आने मिथ्या' कहा है?

- (क) स्कूल-कॉलेज की शिक्षा को।
- (ख) शिक्षा प्रणाली के संशोधन को।
- (ग) सुधारकों के प्रयासों को।
- (घ) स्त्री-शिक्षा को अनर्थकर मानने को।

(iv) 'किसी ने यह राय दी कि सारे स्कूल और कॉलेज बंद कर दिए जाएँ' - वाक्य का प्रकार है:

- (क) सरल वाक्य (ख) संयुक्त वाक्य
(ग) मिश्र वाक्य (घ) साधारण वाक्य

(v) 'सोलहों आने' मुहावरे का अर्थ है:

- (क) एकदम खरा (ख) परम पवित्र
(ग) पूरी तरह (घ) प्रतिभायुक्त

11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए:

2×5 = 10

- (क) आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?
- (ख) बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगलध्वनि का नायक क्यों कहा जाता है?
- (ग) उत्तररामचरित, त्रिपिटक, गाथासप्तशती और सेतुबंध किस भाषा में रचे गए?
- (घ) 'एक कहानी यह भी' की लेखिका के पिताजी के व्यक्तित्व की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
- (ङ.) 'परिमल' के विषय में चार पंक्तियाँ लिखिए।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

लखन कहेउ मुनि सुजसु तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा।।

अपने मुहू तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी।।

नहि संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू।।

बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा।।

- (क) लक्ष्मण ने परशुराम पर क्या व्यंग्य किया? 2
- (ख) लक्ष्मण के व्यंग्यमय शब्दों से परशुराम के व्यक्तित्व की कौन सी विशेषताएँ अभिव्यक्त हुई हैं? 2
- (ग) परशुराम द्वारा गाली देना उसको शोभा क्यों नहीं देता? 1

अथवा

माँ ने कहा पानी में झाँककर
 अपने चेहरे पर मत रीझना
 आग रोटियाँ सेंकने के लिए है
 जलने के लिए नहीं
 वस्त्र और आभूषण शाब्दिक भ्रमों की तरह
 बंधन हैं स्त्री जीवन के

- (क) माँ ने बेटी को चेहरे पर रीझने के लिए मना क्यों किया है? 1
- (ख) 'आग रोटियाँ सेंकने के लिए है जलने के लिए नहीं' आशय समझाइए। 2
- (ग) स्त्री जीवन के बंधन किन्हें कहा है और क्यों? 2
13. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए:
- (क) 'छाया मत छूना' कविता में दुख के कारण क्या बताए गए हैं? 2
- (ख) बच्चे की दंतुरित मुस्कान कवि के मन पर क्या प्रभाव छोड़ती है? 1
- (ग) संगतकार किसे कहते हैं? वह मुख्य गायक की किन-किन रूपों में मदद करता है? 2
14. 'मैं क्यों लिखता हूँ?' प्रश्न का लेखक ने क्या उत्तर दिया है? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए। 5

अथवा

दुलारी का टुन्नू से पहली बार परिचय कहाँ और किस रूप में हुआ?

खंड - घ

15. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर विचार-बिंदुओं के आधार पर निबंध लिखिए: 5
- (क) **बढ़ता हुआ यातायात**
- यातायात का जीवन में महत्व, ● बढ़ते हुए साधन,
 - साधनों के प्रकार, ● लाभ-हानि।
- (ख) **अपनी भाषा**
- अपनी भाषा का महत्व, ● सामाजिक व्यवहार में उसकी उपयोगिता,
 - अपनी भाषा की सेवा और विकास के उपाय।

16. प्रायः अस्वस्थ रहने वाली छोटी बहिन को पत्र लिखकर उसके स्वास्थ्य की जानकारी प्राप्त कीजिए और उसे स्वस्थ रहने के कुछ उपयोगी सुझाव भी दीजिए।

5

अथवा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली के प्रकाशन विभाग के प्रबंधक को पत्र लिखकर उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की बाज़ार में अनुपलब्धि के प्रति उनका ध्यान आकृष्ट कीजिए।

प्रश्नपत्र संख्या 3/1

खंड 'क'

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए:

1×5 = 5

पाटलिपुत्र पहुँचकर यूनानी दूत मेगास्थनीज आचार्य विष्णुगुप्त से भेंट करने के लिए नगर की सीमा से बाहर स्थित उनकी कुटिया पर जब पहुँचा, उस समय शाम ढलने ही वाली थी, अँधेरा छाने लगा था। मेगास्थनीज ने बाहर से ही देखा कि आचार्य अपने आसन पर बैठे कुछ काम करने में लगे हुए हैं। प्रकाश की व्यवस्था के लिए वहीं रखी एक तिपाई पर दीया जल रहा था। मेगास्थनीज के द्वार के निकट पहुँचने पर आचार्य ने उसे भीतर आकर स्थान ग्रहण करने का संकेत किया और स्वयं अपने कार्य में तल्लीन रहे। कुछ समय के उपरांत उन्होंने अपना कार्य समाप्त करके प्रकाशमान दीपक को बुझा दिया और पास ही रखा एक अन्य दीपक जला लिया। मेगास्थनीज सोचने लगा कि जब एक दीपक जल ही रहा था तो आचार्य ने उसे बुझाकर दूसरा दीपक क्यों जलाया? उससे रहा नहीं गया और उसने आचार्य से इसका कारण पूछ ही लिया। आचार्य ने सहजता से कहा, 'तुम जब यहाँ आए, तब मैं जो काम कर रहा था, वह राज्य-व्यवस्था से संबंधित था और तब जो दीपक जल रहा था, उसका खर्च शासन-तंत्र उठाता है। लेकिन अब चूँकि वह कार्य समाप्त हो गया, इसलिए मैंने वह दीपक बुझा दिया। अभी जो दीपक मैंने जला रखा है उसके खर्च का वहन मैं अपनी आय से करता हूँ। मैं अपने व्यक्तिगत कार्य के लिए राज्य के संसाधन का दुरुपयोग कैसे कर सकता हूँ?

मेगास्थनीज ने नैतिक जवाबदेही का ऐसा उदाहरण और कहीं नहीं देखा था। वह समझ गया कि मौर्य-शासन का भविष्य उज्ज्वल है।

- (i) आचार्य विष्णुगुप्त कहाँ रहते थे?

(क) पाटलिपुत्र के भव्य भवन में।

(ख) गाँव की एक मामूली झोंपड़ी में।

- (ग) नगर की सीमा से बाहर कुटिया में।
- (घ) गंगातट पर बने आश्रम में।
- (ii) मेगास्थनीज की सोच का कारण था
- (क) विष्णुगुप्त का कुटिया में निवास करना।
- (ख) उनका अत्यंत व्यस्त रहना।
- (ग) एक दीपक बुझाकर अन्य दीपक जलाना।
- (घ) अपने कार्य को समय पर निबटाना।
- (iii) मेगास्थनीज ने आचार्य से क्या पूछा?
- (क) उनके स्वास्थ्य की कुशल।
- (ख) दूसरा दीपक जलाने का कारण।
- (ग) राज्य-व्यवस्था के बारे में।
- (घ) राज्य की प्रजा के विषय में।
- (iv) दीपक की घटना संदेशवाहक है
- (क) प्रशासक की कर्मठता की।
- (ख) प्रशासक की नैतिक जवाबदेही की।
- (ग) प्रशासक की कुशल प्रशासन शैली की।
- (घ) राज्य के प्रति प्रशासकीय निष्ठा की।
- (v) 'दुरुपयोग' शब्द में उपसर्ग है
- (क) दु
- (ख) दुर
- (ग) दुरु
- (घ) दूर्

2. प्रस्तुत गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प लिखिए :

1×5 = 5

जीवन का कोई भी रास्ता सफल अथवा निर्बाध नहीं होता। कामयाबी के हर रास्ते में कई मुश्किलों का आना तय है। हर बड़ी सफलता के पीछे अनेक छोटी-छोटी असफलताएँ छिपी रहती हैं। किसी बड़े पत्थर के टुकड़े करने के लिए हमें उस पर असंख्य प्रहार करने पड़ते हैं। अंत में एक प्रहार ऐसा होता है कि वह पत्थर को दो टुकड़ों में बाँट देता है। लेकिन क्या अंतिम प्रहार से पहले किए गए सारे प्रहार निरर्थक थे? नहीं। ऊपर से बेशक पहले का हर प्रहार निरर्थक लगता हो लेकिन हर प्रहार पूरी तरह सार्थक था क्योंकि उन प्रहारों में ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी हुई थी। हर चोट ने निरंतर उस पत्थर को टूटने के अधिकाधिक निकट ला दिया था। वास्तव में थोड़ी-बहुत असफलताओं के बिना सफलता संभव ही नहीं।

व्यक्ति अपनी सफलताओं की बजाय असफलताओं से सीखता है। हर असफलता से उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर मिलता है। सफलता के बाद हम कभी अपना पुनर्मूल्यांकन नहीं करते। समस्या, आए बगैर हम रास्ता नहीं खोजते। समस्याएँ ही हमें उपाय खोजने के लिए प्रेरित करती हैं, हमें चिंतनशील बनाती हैं, हममें धैर्य का विकास करती हैं। ठोकर खाने के बाद ही हम अपनी असफलता का कारण जानने का प्रयास करते हैं। उसके बाद ही नए सिरे से आगे बढ़ने के लिए अपनी क्षमता का विकास करते हैं।

जीवन की हर असफलता किसी बड़ी सफलता का आधार बनती है।

- (i) बड़ी सफलता के पीछे असफलताएँ छिपी रहती हैं, क्योंकि

- (क) दुनिया में फूलों के साथ काँटे भी होते हैं।
- (ख) रुकावटों को हटाकर ही आगे बढ़ा जाता है।
- (ग) जीवन का कोई भी मार्ग बाधा रहित नहीं होता।
- (घ) प्रत्येक कार्य में रुकावटें किसी-न-किसी रूप में आती ही हैं।

- (ii) पत्थर पर पड़ने वाले असंख्य प्रहार सिद्ध करते हैं कि

- (क) छोटी-छोटी असफलताओं को जीतकर ही बड़ी सफलता मिलती है।
- (ख) बड़ा पत्थर लगातार छोटे प्रहारों से ही टूटता है।
- (ग) उन पर ही अंतिम प्रहार की सफलता छिपी है।
- (घ) पत्थर बड़े प्रहार से नहीं टूट सकता।

(iii) व्यक्ति सफलताओं के बजाय असफलताओं से अधिक सीखता है, क्योंकि

- (क) असफलताएँ उसे पुनर्मूल्यांकन का अवसर देती हैं।
- (ख) सफलताएँ यह अवसर नहीं देती।
- (ग) सफलता प्राप्ति पर व्यक्ति निश्चित हो जाता है।
- (घ) असफलताएँ उसको सफलता के लिए प्रेरित करती हैं।

(iv) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है

- (क) सफलता का मार्ग
- (ख) सफलता और असफलता
- (ग) असफलताओं से प्रेरणा
- (घ) असफलता सफलता का आधार

(v) 'आधार' का पर्यायवाची शब्द है

- (क) धारदार
- (ख) स्थिर
- (ग) बुनियाद
- (घ) जड़

3. निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

1×5 = 5

मान लूँ मैं हार कैसे?

रोकना मुझको असंभव रूप की मदिरा पिलाकर,
ईंट-पत्थर और काँटे राह में मेरी बिछाकर,
रुक नहीं सकता कदम गर उठ गया जलती चिता पर,
उठ गया तो क्या चिता, शव उठ चलेगा साथ पथ पर,
सौंप दूँ दुर्भाग्य को अपना मनुज-अधिकार कैसे?

आज अंतर-प्यास मेरी रस नहीं, विष चाहती है,
दग्ध प्राणों में प्रलय की गूँज भरना चाहती है,
चाहता मन सिंधु-नभ-थल-गिरि-अतल को जीत लेना,
ज़िन्दगी मेरी कहीं पर भी न रुकना चाहती है,
मैं मरुस्थल का पथिक हूँ, सींच दूँ रसधार कैसे?

- (i) लक्ष्य की ओर बढ़ते पथिक के मार्ग में बाधक नहीं है
- (क) रूप की मदिरा।
 - (ख) मार्ग की बाधाएँ।
 - (ग) दुर्भाग्य का अभिशाप।
 - (घ) जलती चिता।
- (ii) अपराजेय पथिक हार न मानता हुआ चाहता है
- (क) मदिरा द्वारा अंतर की प्यास बुझाना।
 - (ख) उत्साही जीवन में विनाश की हुंकार भरना।
 - (ग) मार्ग की बाधाओं को हटाना।
 - (घ) विजय के मार्ग को प्रशस्त करना।
- (iii) पथिक किस पर विजय प्राप्त करना चाहता है?
- (क) पथ की बाधाओं पर।
 - (ख) मरुभूमि जैसे रसहीन जीवन पर।
 - (ग) सागर, आकाश, भूमि और पर्वत पर।
 - (घ) गतिहीन जीवन पर।
- (iv) 'मैं मरुस्थल का पथिक हूँ' - पंक्ति का आशय है
- (क) मैं रतीले मैदान का बटोही हूँ।
 - (ख) मैं युद्धस्थली का योद्धा हूँ।
 - (ग) मैं कंटकाकीर्ण मार्ग पर चलने का आदी हूँ।
 - (घ) मैं जीवन की दुर्गम और नीरस राह का राहगीर हूँ।

(v) 'मनुज-अधिकार' में समास है

(क) द्विगु

(ख) कर्मधारय

(ग) तत्पुरुष

(घ) बहुव्रीहि

4. नीचे लिखे पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :

1×5 = 5

धूप की तपन खुद सहने
छाँव सबको देने का प्रण
पेड़ों ने लिया,
धूप ने बदले में
फूलों को रंगीन
पेड़ों को हरा-भरा कर दिया।
हजारों मील चलकर
गई थीं जो नदियाँ
और मीठा पानी खारी समंदर को दिया
बदल गया इतना मन समंदर का
रख लिया खारीपन पास अपने
और बादलों के हाथ
भेजा मीठे जल का तोहफा
नदियों को फिर जिसने भर दिया।

(i) पेड़ों की प्रतिज्ञा है

(क) सबको फल देना

(ख) धूप की तपन लेना

(ग) स्वयं कष्ट उठाकर सुख देना

(घ) संसार का हित करना

- (ii) बदले में धूप पेड़ों को देती है
- (क) शीतल छाया
 - (ख) फूलों की सुगंध
 - (ग) पत्तों की हरियाली
 - (घ) शाखाओं की मज़बूती
- (iii) नदियाँ हज़ारों मील किसलिए चलती हैं?
- (क) प्राणियों की प्यास बुझाने के लिए।
 - (ख) भूमि को उर्वर बनाने के लिए।
 - (ग) सागर को मीठा जल देने के लिए।
 - (घ) मरुस्थल को सरस बनाने के लिए।
- (iv) सागर नदियों का ऋण चुकाता है
- (क) उनके मीठे पानी को स्वीकार कर।
 - (ख) उनको खारी जल का उपहार देकर।
 - (ग) मेघों के माध्यम से मीठा जल भेजकर।
 - (घ) नदियों की बाढ़ का कारण बनकर।
- (v) कविता का संदेश है
- (क) जैसे के साथ तैसा व्यवहार।
 - (ख) अपकारी के प्रति उपकार का भाव।
 - (ग) उपकारी के प्रति गहन कृतज्ञता।
 - (घ) कृतघ्नता जीवन का अभिशाप।

खंड ख

5. (i) जहाँ एक प्रधान उपवाक्य और एक या एकाधिक उपवाक्य योजकों द्वारा जुड़े हों, उसे कहते हैं
- (क) सरल वाक्य
 - (ख) संयुक्त वाक्य

- (ग) मिश्र वाक्य
- (घ) जटिल वाक्य

(ii) नीचे लिखे वाक्यों में से मिश्र वाक्य छाँटिए :

- (क) वे भारत आए और 73 वर्ष की जिंदगी जीकर स्वर्गवासी हो गए।
- (ख) वे अक्सर माँ की स्मृति में डूब जाते थे।
- (ग) उनको जितनी चिंता हिंदी की थी उतनी और किसी की नहीं।
- (घ) समय पर कार्य समाप्त करो या यहाँ से चले जाओ।

(iii) निम्नलिखित वाक्यों में संयुक्त वाक्य का चयन कीजिए :

- (क) मैंने जब उन्हें देखा तब वे बीमार थे।
- (ख) उन्होंने कोलकाता से बी.ए. किया और इलाहाबाद से एम.ए.।
- (ग) बाँहें खोलकर इस बार उन्होंने गले नहीं लगाया।
- (घ) वे दिन याद आते हैं जब हम एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे थे।

(iv) निम्नांकित वाक्यों में से मिश्र वाक्य छाँटिए :

- (क) हमारी गोष्ठियों में वे गंभीर बहस करते।
- (ख) वे बेबाक राय और सुझाव देते थे।
- (ग) उन्होंने कभी सोचा भी न था कि इतने आदमी एकत्रित होंगे।
- (घ) दिल्ली आने पर वे मुझसे मिले।

6. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों के पद-परिचय के लिए दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर लिखिए :

1×4 = 4

(i) उसने उनके अनुकरणीय जीवन को नमन किया।

- (क) विशेषण, परिमाणवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (ख) विशेषण, गुणवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (ग) विशेषण, सार्वनामिक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।
- (घ) विशेषण, संख्यावाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ii) उन्होंने श्रद्धांजलि अर्पित की।

(क) संज्ञा, जातिवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ख) संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ग) संज्ञा, भाववाचक, स्त्रीलिङ्ग, एकवचन।

(घ) संज्ञा, द्रव्यवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(iii) वे माँ की स्मृति में अक्सर डूब जाते।

(क) क्रिया-विशेषण, कालवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(ख) क्रिया-विशेषण, स्थानवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(ग) क्रिया-विशेषण, रीतिवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(घ) क्रिया-विशेषण, परिमाणवाचक, 'डूब जाते' का विशेषण।

(iv) जैसा करोगे वैसा भरोगे।

(क) सर्वनाम, प्रश्नवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ख) सर्वनाम, संबंधवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(ग) सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

(घ) सर्वनाम, निजवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन।

7. (i) कर्मवाच्य कहते हैं

1

(क) जहाँ कर्ता प्रधान होता है।

(ख) जहाँ कर्म प्रधान होता है।

(ग) जहाँ भाव प्रधान होता है।

(घ) जहाँ अन्यपद प्रधान होता है।

(ii) निम्नलिखित में कर्तृवाच्य वाला वाक्य छाँटिए :

1

(क) उन्हें मुंबई भेज दिया गया है।

(ख) किस आधार पर ऐसा कहा गया है?

- (ग) आप इस प्रसंग का उल्लेख मत कीजिए।
- (घ) उससे यहाँ बैठा नहीं जाएगा।
- (iii) निम्नलिखित में से कर्मवाच्य वाला वाक्य छाँटिए : 1
- (क) वह भारत की एक उल्लेखनीय विभूति है।
- (ख) उस निबंध को पढ़िए और समझिए।
- (ग) उसके विषय में जानकारी एकत्र की जाए।
- (घ) वह पंखहीन है, उससे उड़ा नहीं जाएगा।
- (iv) निम्नांकित में से भाववाच्य वाले वाक्य का चयन कीजिए : 1
- (क) वह हमारा विरोध कर रहा है।
- (ख) उससे यह काम समय पर पूरा न हो सकेगा।
- (ग) अदालत में उसके नाम का उल्लेख किया गया।
- (घ) आइए, बैठा जाए।
8. (i) निम्नलिखित वाक्यों में मिश्र वाक्य का चयन कीजिए : 1
- (क) तुम देश का हित-चिंतन करो।
- (ख) तुम जिस देश में रहते हो वह महान् है।
- (ग) आस-पास देखिए और पता लगाइए।
- (घ) यह इस कविता का केंद्रीय भाव है।
- (ii) 'नेताजी ने देश के लिए सब कुछ त्याग दिया' - वाक्य का कर्मवाच्य होगा 1
- (क) नेताजी से देश के लिए सब कुछ त्याग गया था।
- (ख) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ का त्याग कर दिया था।
- (ग) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्याग गया।
- (घ) नेताजी द्वारा देश के लिए सब कुछ त्याग दिया गया।
- (iii) अरे! तुमने भी ऐसा कह दिया? रेखांकित का परिचय दीजिए। 1
- (क) अव्यय, घृणासूचक
- (ख) अव्यय, हर्षसूचक

- (ग) अव्यय, शोकसूचक
 (घ) अव्यय, विस्मयसूचक
- (iv) 'मधुरा गुन-गुनाकर कह जाता कौन कहानी यह अपनी।' – में कौन-सा अलंकार है? 1
 (क) उपमा
 (ख) रूपक
 (ग) यमक
 (घ) अनुप्रास
9. (i) 'मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों' में अलंकार है – 1
 (क) उत्प्रेक्षा
 (ख) उपमा
 (ग) रूपक
 (घ) श्लेष
- (ii) प्रस्तुत काव्यांशों में 'यमक' अलंकार का उदाहरण छाँटिए : 1
 (क) पहेली-सा जीवन है व्यस्त ।
 (ख) दुख है जीवन-तरु के फूल ।
 (ग) क्यों सहे संसार हाहाकार ।
 (घ) कर का मनका डारि दे, मन का मनका फेर ।
- (iii) 'पीपर-सात सरिस मन डोला' में कौन-सा पद 'उपमान' है? 1
 (क) पीपर-पात
 (ख) मन
 (ग) सरिस
 (घ) डोला
- (iv) देखूँ उसे मैं नित बार-बार,
 मानो मिला मित्र मुझे पुराना ।
 काव्यांश में अलंकार है – 1

- (क) रूपक
- (ख) उपमा
- (ग) उत्प्रेक्षा
- (घ) श्लेष

खंड ग

10. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प छाँटकर लिखिए: 1×5 = 5

भारतरत्न से लेकर इस देश के ढेरों विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीतयात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। नब्बे वर्ष की भरी-पूरी आयु में 21 अगस्त, 2006 को संगीत-रसिकों की हार्दिक सभा से विदा हुए खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।

- (i) बिस्मिल्ला खाँ को प्राप्त सर्वोच्च सम्मान था।
 - (क) पद्मविभूषण।
 - (ख) संगीत नाटक अकादमी का पुरस्कार।
 - (ग) विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियाँ।
 - (घ) भारतरत्न।
- (ii) बिस्मिल्ला खाँ हमेशा के लिए संगीत के नायक क्यों बने रहेंगे?
 - (क) शहनाई की जादुई आवाज़ के कारण।
 - (ख) सातों सुरों को बरतने की तमीज़ के कारण।
 - (ग) भाईचारे की भावना को मज़बूत करने के कारण।
 - (घ) अजेय संगीतयात्रा के कारण।
- (iii) बिस्मिल्ला खाँ की सबसे बड़ी देन है।
 - (क) संगीत-रसिकों को रसविभोर करना।
 - (ख) संगीत की शास्त्रीय परंपरा को जाग्रत रखना।

- (ग) संगीत की पूर्णता एवं ज्ञान की इच्छा को जीवन-भर सँजोए रखना ।
- (घ) एक सच्ची इंसानियत का उदाहरण पेश करना ।
- (iv) 'संगीत नाटक अकादमी' क्या है और कहाँ स्थित है?
- (क) दिल्ली में, संगीत और नाटकों का आयोजन करने वाली संस्था ।
- (ख) दिल्ली में, संगीतकारों एवं नाटककारों का एक संगठन ।
- (ग) नई दिल्ली में स्थित एक विश्वविद्यालय ।
- (घ) नई दिल्ली स्थित संगीत और नाट्यकला से संबद्ध संस्था ।
- (v) 'खाँ साहब की सबसे बड़ी देन हमें यही है कि पूरे अस्सी बरस उन्होंने संगीत को संपूर्णता व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने भीतर ज़िंदा रखा।' - प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है
- (क) सरल वाक्य
- (ख) संयुक्त वाक्य
- (ग) मिश्र वाक्य
- (घ) असाधारण वाक्य

अथवा

जिस योग्यता, प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई-धागे का आविष्कार हुआ, वह है व्यक्ति-विशेष की संस्कृति; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता ।

जिस व्यक्ति में पहली चीज़, जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्रा में होगी, वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा । एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है, किंतु उसकी संतान को अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है । जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया, वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है ।

- (i) लेखक के अनुसार व्यक्ति-विशेष की संस्कृति का स्वरूप है
- (क) व्यक्ति-विशेष के द्वारा की गई खोज ।
- (ख) व्यक्ति-विशेष के द्वारा उपयोगी वस्तुओं का अनुसंधान ।

- (ग) व्यक्ति-विशेष की उत्कट अभिलाषा जो खोज के लिए प्रेरित करती है।
- (घ) आविष्कार कराने वाली योग्यता और प्रवृत्ति।
- (ii) सभ्यता नाम है उस वस्तु का
- (क) जो खोजी गई है।
- (ख) जो उपयोगी है।
- (ग) जो उपयोगी और संस्कृति द्वारा आविष्कृत है।
- (घ) जो अपने आप में विशिष्ट है।
- (iii) परिष्कृत आविष्कर्ता कौन होता है?
- (क) जो उपयोगी वस्तुओं की खोज करे।
- (ख) जो विशिष्ट पदार्थों का अनुसंधान करे।
- (ग) जो नई-नई खोजों को प्रस्तुत करे।
- (घ) जो पूर्णतः परिष्कृत हो।
- (iv) वास्तविक संस्कृत व्यक्ति कहा जाता है उसको
- (क) जो नई चीज़ की खोज करता है।
- (ख) जो उपयोगी वस्तुओं का निर्माण करता है।
- (ग) जो पूर्वजों से प्राप्त वस्तुओं का परिष्कार करता है।
- (घ) जो विवेक के आधार पर किसी नए तथ्य का दर्शन करता है।
- (v) 'एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है; किंतु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है।' प्रस्तुत वाक्य का प्रकार है
- (क) सरल
- (ख) संयुक्त
- (ग) मिश्र
- (घ) योजक

11. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

2×5 = 10

- (क) फ़ादर की मृत्यु किस रोग के कारण हुई? पाठ के लेखक ने उनके लिए उस रोग के विधान पर क्या टिप्पणी की है? स्पष्ट कीजिए।
- (ख) 'एक कहानी यह भी' की लेखिका ने अपनी माँ को व्यक्तित्वहीन क्यों कहा है?
- (ग) 'स्त्री-शिक्षा के विरोधी कुतर्कों का खंडन' पाठ के लेखक ने स्त्री-शिक्षा के विषय में जो विचार प्रकट किए हैं उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
- (घ) शहनाई की दुनिया में 'डुमराँव' को क्यों याद किया जाता है? पाठ के आधार पर लिखिए।
- (ङ.) किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ? स्पष्ट कीजिए।

12. निम्नलिखित काव्यांश पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा।।

आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।।

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई।।

सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।।

(क) पद्यांश के आधार पर राम के स्वभाव की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

2

(ख) परशुराम ने 'सेवक' और 'शत्रु' किसको कहा है?

2

(ग) 'सहसबाहु' कौन था?

1

अथवा

एक के नहीं,

दो के नहीं,

ढेर सारी नदियों के पानी का जादू;

एक के नहीं,

दो के नहीं,

लाख-लाख कोटि-कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा;

एक की नहीं,

दो की नहीं,

हज़ार-हज़ार खेतों की मिट्टी का गुणधर्म।

- (क) फ़सल को उपजाने में नदी का क्या योगदान है? 1
- (ख) फ़सल से 'हाथों के स्पर्श' का क्या संबंध है? 2
- (ग) फ़सल मिट्टी का गुणधर्म कैसे है? 2
13. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर दीजिए :
- (क) 'छाया मत छूना' कविता में 'मृगतृष्णा' किसे कहा गया है और क्यों? 2
- (ख) 'कन्यादान' कविता में माँ ने बेटी को क्या-क्या सीखें दी हैं? 2
- (ग) 'संगतकार' किसे कहते हैं? 1
14. 'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ को दृष्टि में रखते हुए बताइए कि एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका हो सकती है। 5

अथवा

जितेन नार्गे ने 'साना साना हाथ जोड़ि' की लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में जो जानकारीयाँ दीं, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

खंड घ

15. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निबंध लिखिए : 5
- (क) **विद्यालय का वार्षिक उत्सव**
- विद्यालय का जीवन, वार्षिक उत्सव का दिन, उत्सव का विवरण, आपकी भूमिका।
- (ख) **परिश्रम ही जीवन का आधार**
- परिश्रम का महत्त्व, जीवन में उसकी उपयोगिता, भाग्यवाद का निराकरण।
16. छोटे भाई को पत्र लिखकर मालूम कीजिए कि उसकी पढ़ाई कैसी चल रही है? साथ ही उसे पढ़ाई के संबंध में कुछ उपयोगी बातें भी बताइए।

अथवा

अपने नगर के चिड़ियाघर को देखने पर वहाँ की अव्यवस्था से आपको बहुत दुख हुआ। इस अव्यवस्था के प्रति चिड़ियाघर के निदेशक का ध्यान आकृष्ट करते हुए एक पत्र लिखिए।